श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

देवैः रचिता

॥ श्रीनरसिंहगद्यस्तुतिः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीनरसिंहगद्यस्तुतिः ॥

सत्यज्ञानसुखस्वरूपममलं क्षीराब्धिमध्ये स्थितं
योगारूढमतिप्रसन्नवदनं भूषासहस्रोज्ज्वलम्।
त्र्यक्षं चक्रपिनाकसाभयकरान् बिभ्राणमर्कच्छविं
छत्रीभूतफणीन्द्रमिन्दुधवलं लक्ष्मीनृसिंहं भजे॥

देवाः

भक्तिमात्रप्रतीत, नमस्ते नमस्ते ⋆

अखिलमुनिजन निवह, विहितसवनकदनकर,
खरचपलचरितभयद, बलवदसुरपतिकृत विविध
परिभवभयचकित, निजपदचलित निखिलमखमुख,
विरहकृश तरजलज भवमुख, सकल सुरवरनिकर
कारुण्याविष्कृत, चण्ड दिव्य नृसिंहावतार ⋆

स्फुरितोदग्रतारध्वनिभिन्नाम्बरतार ⋆

निजरणकरण, रभसचलित रणद सुरगण,
पटुपटहविकटरव परिगत चटुल, भटरवरणित
परिभवकर धरणिधर, कुलिशघट्टनोद्भूत ⋆

ध्वनिगम्भीरात्मगर्जित निर्जितघनाघन ⋆

ऊर्जितविकटगर्जित सृष्टखलतर्जित ⋆

सद्गुणगणोर्जित ⋆

योगिजनार्जित ⋆

सर्वमलवर्जित ⋆

लक्ष्मीघनकुचतटनिकट, विलुण्ठन विलग्न कुङ्कुम

पङ्कशङ्काकरारुण, मणिकिरणानुरञ्जित, विगत
शशाकळङ्क शशाङ्कपूर्णमण्डलवृत्त,
स्थूलधवळमुक्तामणि विघट्टितदिव्यमहाहार ⋆
ललितदिव्यविहार ⋆
विहितदितिजप्रहार ⋆
लीलाकृतजगद्विहार ⋆
संसृतिदुःखसमूहापहार ⋆
विहितदनुजापहार ⋆
युगान्तभुवनापहार ⋆
अशेषप्राणिगणविहित, सुकृतदुष्कृत
सुदीर्घदण्डभ्रामित बृहत्कालचक्र,
भ्रमणकृतिलब्धप्रारम्भ स्थावरजङ्गमात्मक,
सकलजगज्जाल जलधारणसमर्थ,
ब्रह्माण्ड नामधेयमहापिठर, करण प्रवीणकुम्भकार ⋆
निरस्तसर्वविस्तार ⋆
निरस्तषङ्भावविकार ⋆
विविधप्रकार ⋆
त्रिभुवनप्रकार ⋆
अनिरूपितनिजाकार ⋆
नियतभिक्षादिलब्धगतरसपरिमित, भोज्यमात्रसन्तोष,
बलविजित मदमदननिद्रादिदोषजन,
धनस्नेहलोभादि, दृढबन्धनच्छेद लब्धसौख्य,
सततकृतयोगाभ्यासनिर्मलान्तः करण,
योगीन्द्र कृतसन्निधान ⋆
त्रिजगन्निधान ⋆
सकलप्रधान ⋆

मायापिधान ⋆
सुशुभाभिधान ⋆
मदविकसदसुरभटमकुट, वनानलनिभनयन ⋆
विलसदसिकवचभुजघन, वनलवननवरुधिरक्रमकल्पित,
  मीन शञ्चत्तरङ्गशैवाल, महाजलूकदुस्तरपङ्क,
  जलनिवहकलित, महासुरपृतनाकमलिनी,
  विलोलनकेळिप्रिय मत्तवारण ⋆
दुष्टजनमारण ⋆
शिष्टजनतारण ⋆
नित्यसुखविचारण ⋆
सिद्धबलकारण ⋆
सुदुष्टासुरदारण ⋆
सदृशीकृताञ्जन ⋆
जनदोषभञ्जन ⋆
घनचिन्निरञ्जन ⋆
निरन्तरकृतभक्तवाञ्छन ⋆
गतसर्ववाञ्छन ⋆
विश्वनाटकसूत्रधार ⋆
अङ्घ्रिधूलिजातखसिन्धुधार ⋆
मध्वसृक्कृत चक्रधार ⋆
जनितकाम ⋆
विगतकाम ⋆
सुरजनकाम ⋆
उद्धृतक्षम ⋆
निश्चलजनसत्क्रियाक्षम ⋆
सुरनतचरण ⋆

धृतरथचरण ⋆
विविधसुरविहरण ⋆
विगतविकार ⋆
विकरण विबुधजनशरण ⋆
सततप्रीत ⋆
त्रिगुणव्यतीत ⋆
प्रणतजनवत्सल, नमस्ते नमस्ते ॥

॥ इति श्रीनरसिंहगद्यस्तुतिः समाप्ता ॥